VOL- XII ISSUE- II FEBRUARY 2025 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 8.379 ISSN 2349-638x

"युगे - युगे क्रांति" नाटक में प्रतिपादित सामाजिक मूल्य

डॉ. पूनम जिभाऊ बोरसे
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला,
तहसील - येवला, जिला – नासिक
Email- bhusarepoonam@gamil.com

विष्णु प्रभाकर जी द्वारा लिखित "युगे – युगे क्रांति" नाटक सामाजिक धरातल पर लिखा गया है। युगे-युगे का अर्थ है हर काल में, हर युग में । क्रांति का अर्थ है काल के अनुसार बदलाव। क्रांति समाज में परिवर्तन बदलाव लाती हैं, जिससे समाज में उन्नति, प्रगति होती है। समाज में अपेक्षित परंपराओं एवं जीवन मूल्यों में परिवर्तन आता रहता हैं। परंपराएँ एवं मूल्य यदि जैसे थे वैसे ही रहेंगे तो समाज प्रगति पथ पर नहीं जाएगा। समय-समय पर क्रांति होती हैं, लेकिन समाज के लोग तुरंत उसे स्वीकारते नहीं। उनके दक़ियानूसी परंपरावादी विचार उसे स्वीकारने से रोकते हैं। उन्हें अपनाने के बजाय गलत प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं। जो लोग समाज में सुधार लाने के लिए क्रांति करना चाहते हैं, उन्हें समाज से पहले अपने परिवार से , माता-पिता से संघर्ष करना पड़ता हैं। वह संघर्ष माता-पिता और उनकी संतान में दूरी पैदा कर देता हैं। पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी की सोच में अंतर दिखाई देता हैं। जिसे अँग्रेजी में जनरेशन गैप कहा जाता हैं। यह जनरेशन गैप पीढ़ियों से चला आ रहा हैं और शायद चलता रहेगा.....

"युगे- युगे क्रांति" नाटक में सन 1875 से लेकर अति आधुनिक युग के दृश्यों का चित्रण किया गया है। एक ही परिवार की पाँच पीढ़ियों का और उनके युग में घटित क्रांति का वर्णन किया गया है। हर युग में क्रांति होती है और उसका असर परिवार पर किस तरह होता है इसका वर्णन विष्णु प्रभाकर जी ने इस नाटक में किया है। यह नाटक यथार्थवादिता तथा वास्तविकता के धरातल पर आधारित है।

1875 : परदा प्रथा का विरोध :

नाटक का पहला दृश्य 1875 के युग से चित्रित किया गया हैं। कल्याण सिंह और रामकली इस दृश्य के प्रमुख पात्र है। दोनों की नई-नई शादी हुई हैं। विवाह से पूर्व दोनों ने एक दूसरे का चेहरा देखा नहीं होता और विवाह के पश्चात भी पति- पत्नी होते हुए भी एक दूसरे का चेहरा नहीं देख सकते। उनके परिवार की परंपरा थी की विवाह के पश्चात भी पति-पत्नी कई महीनों तक दिन में एक दूसरे का चेहरा नहीं देख सकते। कल्याण सिंह को परिवार की यह परंपरा दक़ियानूसी लगती है और वह परदा प्रथा का विरोध करता है। सदियों से चली आ रही परंपरा का उल्लंघन कर कल्याण सिंह अपनी पत्नी का चेहरा दिन में देखता है। इस बात पर घर में बहुत बड़ा हँगामा होता है और उसे अपने पिताजी से मार भी पड़ती हैं। कई दिनों तक इस बात को लेकर परिवार एवं समाज में बहस चलती रहती है।

कल्याण सिंह "..... आज पहली बार मुझे अपना भला करने का मौका मिला है। उस भले में ही समाज का भला हैं , धर्म का भला हैं"। (पृष्ठ क्र. 22, "युगे युगे क्रांति" - विष्णु प्रभाकर) वैसे देखा जाए तो आज के दौर में यह बहुत ही मामूली बात लगती हैं। लेकिन उस युग में परदा प्रथा का विरोध करना यह बहुत बड़ी क्रांति मानी गयी थी।

1901 : विधवा पुनर्विवाह :

नाटक का दूसरा दृश्य 1901 के युग पर चित्रित किया गया है। परदा प्रथा का विरोध करनेवाले कल्याण सिंह के घर में पच्चीस वर्ष बाद उसका पुत्र प्यारेलाल इन्हीं की तरह तत्कालीन आर्य समाज के समाज सुधारकों से जा मिला और उसने प्रतिज्ञा की कि वह विधवा से विवाह करके समाज में सुधार लाने का प्रयास करेगा। लेकिन कल्याण सिंह को अपने बेटे की यह बात स्वीकार नहीं थी और उनके मतानुसार प्यारेलाल विधवा से विवाह करके धर्म को भ्रष्ट करना चाहता है और खानदान की इज्ज़त मिट्टी में मिला रहा है।

प्यारेलाल अपने पिता से कहता है कि " समाज उसे विवाह करने का अधिकार नहीं देता. यौवन को बरबाद करने का अधिकार देता है. चोरी-चुपे पाप करने का अधिकार देता है। लेकिन दूसरी बार अग्नि को साक्षी बनाकर विवाह करने

का अधिकार नहीं देता"। (पृष्ठ क्र. 29, "युगे-युगे क्रांति" - विष्णु प्रभाकर)

प्यारेलाल अपने पिता का कहना नहीं मानता और घर छोडकर चला जाता है और कलावती से विवाह करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता हैं। हर व्यक्ति चाहता है कि समाज में सुधार हो। लेकिन उसकी शुरुआत अपने घर से हो ऐसा कोई नहीं चाहता। कल्याण सिंह स्वयं आर्य समाज से जुड़े थे लेकिन जब उनका बेटा प्यारेलाल विधवा पुनर्विवाह करना चाहता हैं तो उसका साथ देने के बजाय वह अपने परिवार की इज्ज़त के बारे में सोचते हैं और प्यारेलाल का विरोध कर उसे घर से बेदखल कर देता हैं। यहाँ हमें दो पीढ़ियों की सोच में अंतर दिखाई पड़ता हैं।

1920-21 : लड़कियों का असहकार आंदोलन में सहभाग एवं अंतरजातीय / अंतर प्रांतीय विवाह :

नाटक का तीसरा दृश्य 1920-21 के युग पर चित्रित किया गया है। आर्य समाज के सदस्य प्यारेलाल की बेटी शारदा गांधीजी के विचारों से प्रभावित हैं और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा लगाकर वह देश की आजादी के लिए आंदोलन में भाग लेना अपना अधिकार समझती हैं। लेकिन प्यारेलाल को घर की बेटियों का आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेना मंजूर नहीं और वह उसका विरोध करते हैं। लेकिन शारदा अपने पिताजी के विरोध में जाकर आंदोलन में हिस्सा लेती हैं और समाज तथा देश में एकता लाने के लिए विमल से अंतर प्रांतीय विवाह भी करती हैं। प्यारेलाल ने स्वयं अपने युग में विधवा से विवाह करके बहुत बड़ी क्रांति की थी। आर्य समाज के सदस्य होने के कारण वह अपनी बेटी को शिक्षित भी करते है। लेकिन अपनी बेटी गांधी जी के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में हिस्सा ले ये उन्हें पसंद नहीं क्यों कि इससे घर की इज्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी।

प्यारेलाल - "क्रांति मैंने भी की है लेकिन क्रांति का अर्थ यह नहीं है कि कुल, समाज और धर्म की लाज को घोलकर पी लिया जाए। मैं स्वयं जाता हूँ, देखता हूँ वह कैसे नहीं आती?" (पृष्ठ क्र. 44, "युगे युगे क्रांति"- विष्णु प्रभाकर)

शारदा अपनी जगह सही थी और प्यारेलाल को लगता था कि वह सही हैं। प्यारेलाल को उसके विवाह की भी चिंता सताती थी लेकिन शारदा ने अपना वर स्वयं चुना तो प्यारेलाल उसे स्वीकार नहीं करते और उसे घर से निकाल देते है। प्यारेलाल ने स्वयं समाज सुधार ने के लिए विधवा से विवाह किया था और आज जब उनकी बेटी अंतरजातीय अंतर प्रांतीय विवाह करके देश में एकता लाने का प्रयास कर रही थी तो प्यारेलाल उसे स्वीकार नहीं करते। यहाँ भी हमें दो पीढ़ियों के दरमियान दरार दिखाई देती है।

1942 : अंतर धर्मिय विवाह :

नाटक का चौथा दृश्य 1942 के युग पर चित्रित किया गया है। शारदा और विमल अंतर प्रांतीय विवाह करके समाज में क्रांति लाना चाहते थे। लेकिन 25 वर्ष बाद जब उनका बेटा प्रदीप ईसाई धर्म की लड़की जैनेट से अंतर धर्मिय विवाह करना चाहता हैं तो शारदा को यह बात धर्म के विरुद्ध लगती हैं और वह विवाह को स्वीकृति नहीं देती और विमल जैनेट से धर्म परिवर्तन करने के लिए कहकर उसे जैनेट से जान्हवी बन जाने के लिए कहता है। लेकिन प्रदीप इस बात को स्वीकार न कर अपने पिता से कहता है- " जैनेट को यदि शुद्ध करके जान्हवी नाम दे दिया जाएगा तो क्या इसका कुछ बदल जाएगा? नाम बदल जाने से गुण और दोष नहीं बदल जाते। बदल सकते तो आज हर बुरी चिज के अच्छे नाम रख दिए जाते। नहीं माताजी मैं इस ढोंग में विश्वास नहीं करता। इस या उस धर्म में जाने से किसी का स्वभाव नहीं बदलता"। (पृष्ठ क्र. 59, "युगे युगे क्रांति"- विष्णु प्रभाकर)

शारदा और विमल की बात स्वीकार न कर प्रदीप घर से निकल जाता है। शारदा और विमल ने अपने युग में अंतर प्रांतीय अंतर जातीय विवाह करके बहुत बड़ा साहस दिखाया था। लेकिन अब उनका बेटा धर्म भेद को न मानकर अपनी पसंद की लड़की से विवाह करना चाहता हैं तो दोनों उसे साथ देने के बजाय उसका विरोध करते हैं और उसे संस्कृति का शत्रु समझते हैं। शारदा और विमल अपने युग में क्रांतिकारी थे लेकिन आज वह प्रतिक्रियावादी बन जाते हैं। इस युग में भी हमें दो पीढ़ियों की सोच में दरार दिखाई देती हैं।

अति आधुनिक युग :

नाटक का पाँचवां दृश्य अति आधुनिक युग पर चित्रित किया गया है। ऐसा कहा जाता है की माता-पिता से दो कदम आगे उनके बच्चे होते हैं। यह उक्ति हमें नाटक के हर दृश्य में दिखाई देती है। प्रदीप और जैनेट अंतर धर्मिय विवाह करके समाज में नई क्रांति लाना चाहते थे। लेकिन भविष्य में उनका बेटा अनिरुद्ध अति आधुनिक विचारों के प्रतीक के रूप में आता हैं। अनिरुद्ध विवाह प्रथा में विश्वास नहीं करता। उसका मानना हैं कि विवाह समाज की एकमात्र परंपरा का पालन करता हैं। सड़ी गली परंपराओं को चिपके रहने से समाज रोगी बन जाता है। वह पाश्चात्य संस्कृति को मानता हैं

और लिविंग रिलेशनशिप मे रहना पसंद करता है। वह कई जीवन संगिनियाँ बदल चुका हैं। अनिरुद्ध अपने माता-पिता को दक़ियानूसी समझता है और उसके माता पिता उसे संस्कृति का शत्रु मानते हैं। इस दृश्य में भी हमें दो पीढ़ियों के विचारों मे दरार दिखाई देती हैं।

नाटक का अंतिम दृश्य:

नाटक के अंत में देवीप्रसाद की पत्नी बताती हैं कि उनकी बेटी ने विवाह कर लिया हैं। यह सुनकर देवीप्रसाद को लगता है कि वह अपनी बेटी की शादी की जिम्मेदारियों से मुक्त हो गया हैं; किंतु दूसरे ही पल उसे लगता हैं कि उसकी बेटी ने उससे अनुमति नहीं ली। उसे इस बात का दुख हैं और डर हैं कि कही मेरी बेटी ने गलत जीवन साथी तो नहीं चुन लिया ।इस नाटक में इतिहास अपने आप को बार-बार दोहरा रहा हैं। हर युग में नई पीढी पुरानी पीढी की मान्यताओं को तोड रही हैं। क्रांति का अंत ही नहीं हैं; परिवर्तन का चक्र हैं कि हर युग में चलता ही रहता हैं, रुकता ही नहीं।

निष्कर्ष :

नाटककार विष्णु प्रभाकर ने 'युगे – युगे क्रांति' इस नाटक का सृजन यह दिखाने के लिए किया है कि प्रत्येक युग में परिवार या समाज के भीतर आचार-विचार में परिवर्तन होता ही रहता है। हर युग में कुछ न कुछ क्रांति होती है। उसका असर परिवार, समाज और देश पर होता है। लेकिन क्रांति करनेवाले सहजता के साथ क्रांति नहीं कर पाते। उसके लिए उन्हें समाज का ही विरोध नहीं सहना पड़ता तो सबसे पहले अपने परिवार का विरोध सहना पड़ता हैं। हर व्यक्ति चाहता हैं कि देश बदले, समाज बदले और बदलाव क्रांति द्वारा हो। लेकिन क्रांति की शुरुआत अपने घर से हो ऐसा कोई नहीं चाहता। माता-पिता अपने युग में परिवर्तन लाने के लिए क्रांति करते हैं लेकिन वही क्रांति उनके बच्चे अपने युग में करना चाहते हैं तो माता-पिता उनका साथ देने के बजाय उनका विरोध करते हैं और यही पर आपसी सोच में और रिश्तों में दरार पैदा हो जाती है और यह चक्र हर युग में चलता ही रहता हैं रुकता ही नहीं।

विष्णु प्रभाकर जी ने नाटक के पाँच दृश्यों में परदा प्रथा, विधवा पुनर्विवाह, अंतर जातीय विवाह, अंतर धर्मिय विवाह, लिविंग रिलेशनशिप जैसी बदलती विवाह पद्धति का चित्रण किया हैं। विष्णु जी ने बड़े ही मार्मिक ढंग से हर युग में होने वाली क्रांति और उसका परिवार पर पडनेवाला प्रभाव का वर्णन अपने नाटक में किया हैं। क्रांति के साथ ही हर युग में दिखाई देनेवाला जनरेशन गैप भी दिखाई पड़ता है। हर युग में होने वाली मूल्य परिवर्तन की क्रांति के साथ ही माता-पिता और उनके बच्चों के बीच के जनरेशन गैप की समस्या का भी वास्तविक चित्रण नाटक में किया गया हैं। यह नाटक हमें सोचने पर मजबूर कर देता है कि समय की मांग के अनुसार अपने मूल्यों को बदलना आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ : -

1. युगे-युगे क्रांति – विष्णु प्रभाकर – राजपाल एंड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली संस्करण
2. विष्णु प्रभाकर के नाट्य साहित्य में सामाजिक चेतना – डॉ. बी. एस. विवेकानंदन पिल्ले, जवाहर प्रकाशन 2007
3. विष्णु प्रभाकर का निबंधक साहित्य – अपर्णा पालीवाल
4. विष्णु प्रभाकर व्यक्ति और साहित्य - डॉ. महीप सिंह, अभिव्यंजना संस्करण, 1983